ذُرُوسٌ فِي الْقِرَاءَةِ

الدَّرْسُ الأَوَّلُ : مَاذَا فَعَلَ يَاسِرٌ؟

الدَّرْسُ الثَّانِي: الْقُرْآنُ الْكَرِيمُ

erstellt von

https://madinaharabischkursbuecher.wordpress.com/

| الدَّرْسُ الأوَّلُ | مَاذَا فَعَلَ يَاسِرٌ ؟ | | |
|---------------------------|-------------------------|--|--|
| التَّرْجَمَةُ | الْجَمْعُ | الْمُفْرَدُ | |
| Was? | _ | مَاذَا؟ | |
| Qāsim | _ | قَاسِمْ | |
| Yāsir | _ | يَاسِرُ مُبَكِّراً | |
| spät | _ | مُبَكِّراً | |
| danach | _ | بَعْدَ ذلكَ | |
| Hausaufgaben -arbeit | _ | الْوَاحِبُ الْمَنْزِلِيُّ | |
| Frühstück | _ | فَطُوْرٌ | |
| Restaurant | مَطَاعِمُ قُمْصَانٌ | مَطْعَمْ | |
| Hemd | قُمْصَانٌ | قَمِيْص | |
| Dein Hemd | _ | قَمِيْصٌ + كَ = قَمِيْصُكَ | |
| lst , Bist , Hast , Sind? | _ | هَلْ؟ | |
| zwischen | _ | يَيْنَ | |
| Liste | قَوَاتِمُ كَلمَاتٌ | قَائِمُةٌ | |
| Wort | كَلِمَاتٌ | كَلِمَةٌ | |
| nützlich | _ | مُفيْدٌ | |
| Wasser | مِيَاهٌ | مَاء | |
| Gestern | _ | أَمْسِ | |
| Abendessen | أُعْشِيَةٌ | عُشَاءٌ | |
| Sālih | _ | صَالِحٌ أُمِينٌ كُرَةُ الْقَدَمِ | |
| Amīn (Name) | mīn (Name) | | |
| Fußball | _ | كُرَةُ الْقَدَمِ | |

| الدَّرْسُ الأوَّلُ | مَاذَا فَعَلَ يَاسِرٌ ؟ | | | |
|---|-------------------------|-------------|--------------|--------------|
| التَّرْجَمَةُ | الْجَمْعُ | | الْمُفْرَدُ | |
| Tabelle | جَدَاوِلُ | | جَدْوَلٌ | |
| mal , einmal | مُرَّاتٌ | | مُرَّةً | |
| Spalte | أَعْمدُةٌ | | عَمُودٌ | |
| Seife | _ | | صَابُو ْنُ | |
| التَّرْجَمَةُ | الْمَصْدَرُ | الأَمْوُ | الْمُضَارِعُ | الْمَاضِي |
| aufwachen , aufstehen | اسْتِيْقَاظُ | اسْتَيْقِظْ | يَسْتَيْقِظُ | اسْتَيْقُظَ |
| - rezitieren - folgen | تِلاوَةٌ | ٱتْلُ | يَتْلُو | تُلا |
| schreiben | كِتَابَةٌ | ٱكْتُبْ | يَكْتُبُ | کتُب |
| nehmen , einnehmen (Mahlzeit , Medizin) | تَنَاوُلُ | تَنَاوَلْ | يَتَنَاوَلُ | تَنَاوَلَ |
| waschen | غُسْلٌ | اغسل | يَغْسِلُ | غُسَلَ |
| trinken | شُرْبُ | ٳۺ۠ۯؘؙۘۘٮ | يَشْرَبُ | شُرِبَ |
| spielen | لُعْبٌ ، لَعِبٌ | الْعَبْ | يَلْعَبُ | لَعِبَ |
| eintreten , hereinkommen | دُخُولٌ | ٱۮ۫ڂؙڶ | يَدْخُلُ | دُخَلَ |
| etwas benutzen | اسْتِعْمَالٌ | ٳڛؾۘڠڡؚڵ | يَسْتَعْمِلُ | اِسْتَعْمَلَ |

| الدَّرْسُ الثَّانِي | الْقُرْآنُ الْكَرِيمُ | | |
|--------------------------------------|-----------------------|--|--|
| الدَّرْسُ الثَّانِي التَّرْجَمَةُ | الْجَمْعُ | الْمُفْرَدُ اَلْقُرْآنُ الْكَرِيْمُ | |
| Der edle Qur'ān | _ | | |
| Buch | كُتُبٌ ٚ | كِتَابٌ | |
| das Buch Allah´s | _ | كِتَابُ اللهِ | |
| Jibrīl | _ | جِبْرِ يْلُ | |
| Prophet | أُنْبِيَاءُ | نَبِيٌ | |
| Analphabet | _ | أُمِي | |
| Strafe | عَذَابَاتٌ | عَذَابٌ | |
| Hölle | _ | جَهَنَّمُ | |
| Gnade , Annehmlichkeit | نُعَمَاءُ | نَعِيمٌ | |
| Nachricht | ٲۨڂٛڹٲڒؙ | خَبَرٌ | |
| Paradies | جَنَّاتٌ ، جِنَانٌ | جُنَّةٌ | |
| Gemeinschaft | أُمَمُ | أُمَّة | |
| Geschichte | قِصُصٌ ، قَصَصٌ | قِصَّةٌ | |
| Die Prophetengeschischten | _ | قِصَصُ الأَنْبِيَاءِ | |
| besser | _ | ٠٠ ه٠ خيبر | |
| Buchstabe | حُرُوفٌ | حَرْفٌ | |
| Ausspruch | أَقْوَلُ ۗ | قَوْلٌ | |
| Alif Lam | _ | ۲۱ | |
| Alif | _ | أَلِفٌ * | |
| Lām | _ | ڵٲؙٞ | |
| Mīm | | میم | |

| الدَّرْسُ الثَّانِي | الْقُرْآنُ الْكَرِيمُ | | | |
|---|-----------------------|-----------|--|-----------|
| التَّرْجَمَةُ | الْجَمْعُ | | الْمُفْرَدُ | |
| Dschinn | - | _ | جن ؑ | |
| als, sobald , wenn | - | _ | عِنْدَمَا | |
| Wunder , wundervoll | ابٌ: | أَعْجَ | عُجُبٌ | |
| Schutz , Sicherheit | - | _ | أُمْنُ | |
| nie , nicht (Verneinung in der Zukunft) | - | _ | لَنْ لَنْ | |
| Herr | أُرْبَابٌ | | رَبٌ | |
| Mein Herr | _ | | $\hat{C} = \hat{C} + \hat{C} = $ | |
| von (aus) was | _ | | مِنْ + مَا = مِمَّ | |
| mit was | _ | | ب الما الما الما الما الما الما الما الم | |
| Lohn , Vergeltung | _ | | جَزَاءٌ | |
| Gegenteil | _ | | ٵڎٞ | مُصُ |
| Feuer | نِيرَانُ | | نَارٌ | |
| aber , jedoch | - | | لَكِنْ | |
| Tat , Wohltat | حُسنَاتٌ | | حُسنَةٌ | |
| التَّرْجَمَةُ | الْمَصْدَرُ | الأَمْرُ | الْمُضَارِعُ | الْمَاضِي |
| herabsteigen , aussteigen von | نُزُولٌ | ٳڹ۠ڒؚڶ | يَنْزِلُ | الْمَاضِي |
| warnen jmd. | ٳڹ۠ۮؘٲڒؙ | ٲؙڹٛۮؚڕۨ | يُنْذُرُ | أُنْذَرَ |
| verkünden etwas (gute Nachrichten) | تَبْشِيرُ | بُشّر | يُبشّرُ | بَشَّر |
| jmd. etwas lehren | تَعْلِيمٌ | عَلِّمْ | يُعَلِّمُ | عَلَّمَ |
| lernen | تَعَلَّمْ | تَعَلَّمْ | يَتَعَلَّمُ | تَعَلَّمَ |
| hören | سُمْعُ | إسْمَعْ | يَسْمَعُ | سُمِعَ |

| الدَّرْسُ الثّانِي | الْقُرْآنُ الْكَرِيمُ | | | |
|---|-----------------------|----------|--------------|----------------|
| التَّرْ جَمَةُ | الْمَصْدَرُ | الأَمْرُ | الْمُضَارِعُ | الْمَاضِي |
| leiten , rechtleiten | هِدَايَةٌ ، هُدًى | اهْد | يَهْدِي | هَدَى |
| - jmd. etwas beigesellen , - zur Seite stellen | إِشْرَاكُ | أَشْرِكْ | يُشْرِكُ | أَشْرَكَ - بِـ |

﴿ إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآناً عَجَبَاً * يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ وَلَنْ نُشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَداً ﴾ [الحن ١- ٢]

" Wir haben einen wunderbaren Qur'ān gehört " *

der zur Besonnenheit leitet ; so haben wir an ihn geglaubt , und wir werden unserem Herrn niemanden beigesellen